Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, OCT-NOV 2018, VOL- 6/30

गेपाल चम्पू काव्य में विधा वैशिष्ट्य

अंजू माला अग्रवाल, Ph. D.

बी० एड० विभाग, बी० एस० ए० कॉलेज, मथुरा

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

गोपाल चम्पू काव्य के सम्बन्ध में संस्कृत साहित्य के लक्षण के लक्षण ग्रन्थों के अनुशीलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि आचार्य दण्डी कृत लक्षण 'गद्यतद्यमयी काचिच्चम्पूरिव्यपि विद्यते' के अतिरिक्त कोई अन्य लक्षण समान रूप से समस्त चम्पू काव्यों पर घटित नहीं होता। आचार्य हेमचन्द्र द्वारा निर्दिष्ट साक्ङत्व और सोच्छवासत्व की विशिष्टता तथा उक्ति—प्रत्युक्ति व विष्कम्भक का अभाव रूप लक्षण तो अव्याप्ति दोषग्रस्त है हीं, स्वयं चम्पूकार भी कोई निर्दुष्ट लक्षण प्रस्तुत नहीं कर सके। चम्पूकारों ने अपने ग्रन्थों में चम्पू काव्य—विधा की प्रशंसा करते हूये मात्र उसकी सरसता, हृदयग्राहित आह्लादकता और लालित्य आदि का ही उल्लेख किया है। उनकी उक्तियों से सरस ललित गद्य पद्यमयता के अतिरिक्त चम्पू का कोई अन्य वैशिष्ट्य प्रकट नहीं होता। चम्पू का दोष रहित लक्षण न हो सकने का कारण, चम्पूकारों की स्वच्छन्द प्रतृति रही है, जिसका उल्लेख संस्कृत साहित्य के प्राय: सभी इतिहासकारो ने समान रूप से किया है ऐसी स्थिति में उपलब्ध चम्पू काव्यों के आधार पर उसकी अन्त: व बाहय विशिष्टताओं की समीक्षा आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

१. प्रबन्धात्मकना :

संस्कृत साहित्य में गोपाल चम्पू काव्य, श्रव्य काव्यों के अन्तर्गत मिश्र श्शैली में रचित प्रबन्ध काव्य माने जाते हैं। सामान्यता समस्त चम्पू काव्य किसी न किसी कथावस्तु पर आधारित है। यह अवश्य है कि कुछ चम्पूकारों ने अपने ग्रन्थों में कथावस्तु की तुलना में वर्णन, चित्रण आदि को अधिक महत्व प्रदान किया है। कथावस्तु के सन्निवेश के आधार पर तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है।

(क) कतिपय चम्पू काव्य ऐसे हैं जिनमें कवि ने कथावस्तु का आद्योपान्त अविच्छिन्न रूप में निर्वाह किया है, जैसे नल—चम्पू, यशस्तिलक चम्पू आदि।

(ख) दूसरी श्रेणी में उन चम्पू काव्यों को रखा जा सकता है, जिनमें कथावस्तु का उपयोग मात्र भूमि—का और उपसंहार में दिखाई पड़ता है तथा ग्रंथ विविध दृश्यों के चरित्र और स्थानों के विस्तृत विवरण से भरा होता है। विश्वगुणादर्श, मन्दारमरन्द तथा अन्य यात्रा प्रबन्धात्मक चम्पू इसी श्रेणी में आते हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(ग) तृतीय श्रेणी के अन्तर्गत कथावस्तु के नितांत अभाव वाले विरूद्ध वर्णनात्मक या विचार प्रधान चम्पू काव्य आते हैं। सारावती जलपातवर्णन आदि वर्णनात्मक चम्पू काव्य हैं तो तत्वगुणदर्श, विद्वन्नमोदतरंगिणी आदि विचारप्रधान, इस श्रेणी के चम्पू काव्यों से अधिकांश घश्वीं शताब्दी के प्श्चात् रचे गये। वस्तुतः सुस्पष्ट लक्षण निर्देश के अभाव तथा चम्पूकारों की स्वच्छन्द प्रवृति के फलस्वरूप घश्वीं शताब्दी का परवर्तीकाल चम्पू काव्यों के विषय—विस्तार के लिये क्रान्तिकारी रहा है। इस समय पूर्व—स्वीकृत प्रबन्धत्मकता की सीमाओं को तोड़कर कतिपय चम्पूकारों द्वारा गद्य—पद्य मिश्र शैली में वर्णन एवं विचार—प्रधान ग्रन्थों की रचना की गयी। गद्यपद्यमयता के सामान्य लक्षण से युक्त होने के कारण ही मिश्र शैली में रचित इन ग्रन्थों को कथावस्तु के नितांत अभाव के बावजूद चम्पू काव्य मान लिया गया।

उपरि वर्णित तीनों श्रेणियों के चम्पू काव्यों को प्रबन्धात्मकता की दृष्टि से हम पुनः दो वर्गो में विभक्त कर सकते हैं — (घ) बन्धयुक्त (ह्म) बन्ध विहीन। आद्यन्त कथावस्तु आधारित प्रथम श्रेणी के चम्पू काव्य बन्धयुक्त चम्पू काव्यों के अन्तर्गत आ जाते हैं, जबकि द्वितीय व तृतीय श्रेणी के काव्यों को बन्धविहीन वर्ग में सन्निविष्ट किया जा सकता है। इनमें कथावस्तु का या तो पूर्णतया अभाव होता है अथवा नाम मात्र की एक क्षीण सी कथा का अवलम्बन होता है।

२. गोपाल चम्पू काव्य का वर्ण्य—विषय निश्चित नहीं है। मिश्र शैली में रचित होने के कारण इनमें गद्य और पद्य दोनों ही प्रकार के काव्यों की विषय सामग्री देखने को मिलती है। प्राकृतिक वर्णन, युद्ध, विवाह, यात्रा, वैचारिक आदान—प्रदान, नायक —नायिका, संयाग—वियोग इत्यादि सभी कुछ इनमें उपलब्ध है। इस प्रकार चम्पू काव्यों का वर्ण्य—विषय, विस्तृत और व्यापक है। वस्तुतः काव्य काव्य का क्षेत्र एक निश्चित सीमा में बाधा भी नहीं जा सकता।

३. गोपाल चम्पू काव्यों की कथावस्तु का चयन क्षेत्र संस्कृत साहित्य की किसी भी एक काव्य विधा से व्यापक और विस्तृत है। चम्पूकारों ने कथावस्तु संग्रह में उदार दृष्टिकोण अपनाया है। हिन्दू धर्म—ग्रन्थों में रामायण, महाभारत पुराणों से भी पर्याप्त घटनाओं गृहीत हैं। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक चरित्रों और भौगोलिक वर्णनों को आधार बनाकर भी चम्पू काव्यों का सजृन हुआ है। चोल—चम्पू जैसे चम्पू ग्रन्थों में स्थानीय देवताओं, महोत्सवों और उनके महात्म्य का वर्णन मिलता है। धर्म गुरूओं और विविध—सम्प्रदायों के सन्तों के चरित भी चम्पू काव्यों के वर्ण्य विषय रहे हैं। कतिपय चम्पूकारों ने अपने आश्रयदाताओं को भी विषय बनाकर ग्रन्थों की रचना की है। इस प्रकार कथानक के मूल स्रोत क दृष्टि से गोपाल चम्पू काव्यों का फलक अत्यन्त विस्तृत है।

४.नायक—नायिका और अन्य पात्र

आचार्यों के निर्देशों से परे हटकर, गोपाल चम्पू काव्यकारों ने अपने ग्रन्थों का नायक सभी प्रकार के व्यक्तियों को बनाया है। चम्पू काव्यों के नायक ऋषि, मुनि, देवता, राजा, गन्धर्व,

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विद्वान, आचार्य, श्रेष्ठी, जमींदार आदि सभी श्रेणियों और वर्गों के व्यक्ति हैं। उदाहरणार्थ विश्वगुणादर्श चम्पू का नायक गन्धर्व पौराणिक और ऐतिहासिक चम्पू काव्यों के नायक राजा, 'श्री निवास मुनि यात्रा विलास' चम्पू के नायक मुनि, 'आचार्य–विजय' के नायक आचार्य, विक्रसेन चम्पू व चन्द्रशेखर चम्पू के नायक जमींदार श्रीकृष्ण चम्पू के नायक श्रेष्ठी तथा स्थानीय चम्पू काव्यों के नायक देवता है। कतिपय चम्पू काव्यों में प्रतिनायक भी हैं, '' जैसे – 'माधव–चम्पू'। नायिकायें राजकन्या से लेकर भिल्ल कन्या तक सभी हैं। कुछ चम्पू काव्य नायिका–विहीन भी हैं। नायक के अतिरिक्त अन्य पात्र क रूप में देवताओं से लेकर साधरण कोटि के व्यक्तियों तक सभी चम्पू काव्यों में वर्णित हैं। कतिपय चम्पू काव्यों में पशु पक्षी भी पात्र के रू में रखे गये हैं। जैसे बैकुण्ठ विजय चम्पू। पात्रों की संख्या को लेकर चम्पू काव्यों में कोई प्रतिबन्ध नहीं दिखता। प्रख्यात नल चम्पू में ही पात्रों की संख्या र्श्ं तिक पहुंच गयी है जिनमें ीिं पुरूष, ह्मघ स्त्रियाँ एवं एक किन्नर–मिथुन पात्र है। इस प्रकार नायक–नायिकाओं और पत्रों का चयन तथा उनकी संख्या भी चम्पू काव्याकारों की स्वच्छन्द प्रकृति की परिचायक है। एक से अधिक नायक वाले भी कुछ चम्पू काव्य हैं जैसे–चोल चम्पू में एक वंश के कई व्यक्तियों तथा जैनाचार्य विजय चम्पू में अनेक आचार्य को नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, यद्यपि इनमें भी व्यक्ति –विशेष को ही वर्णन का मुख्य आधार बनाया गया है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गोपाल चम्पू काव्य नायक–नायिकादि सम्बन्धी आचार्यों के निर्देशों के बन्धन से मुक्त है।

५. रस

अधिकांश गोपाल चम्पू काव्यों के अग्डीरस वीर व श्रृंगार है–विजय काव्यों में वीर रस की तथा परिणय काव्यों में श्रृंगार की प्रमुखता देखी जा सकती है। धार्मिक विचारों को आधार बनाकर रचित चम्पू काव्यों में शान्त रस की प्रधानता है। इनमें श्रृंगार वीर प्रभृति अन्य रस शान्त रस के पोषक बन कर आये हैं। अन्य रसों का परिपाक भी चम्पू काव्यों में यथा सम्भव पाया जाता है। कई चम्पूकारों ने अपनी रस–सिद्धता दिखाने के लिये एक ही स्थान पर सभी रसों का प्रयोग किया है।

६. शैली एवं छन्द

गोपाल चम्पू काव्य अन्य पुरूषात्मक और संवादात्मक –इन दो प्रमुख शैलियों में निबद्ध है। नल चम्पू, यशस्तिलक चम्पू, जीवन्धर चम्पू आदि अन्य पुरूषात्मक तथा विष्णुगुणादर्श, वीरभद्र चम्पू आदि संवादात्मक शैली क उत्कृष्ट उदाहरण है। संवादात्मक शैली में निबद्ध चम्पू काव्य वर्णन प्रधान होने के कारण न तो नाटकों क समान अभिनेय है और न ही दृश्य काव्य की भांति इनका विभाजन अक्डो और दृश्यों में हुआ है। श्री निवास चम्पू का पूर्वार्ध अन्य पुरूषात्मक शैली में तथा उत्तरार्ध संवादात्मक शैली में निबद्ध है।

गद्यपद्यमिश्रित शैली का आश्रय चम्पू काव्यों की विशिष्टता है। गद्य—पद्य प्रयोग की मात्रा में कोई बन्धन नहीं दिखता, इस सम्बन्ध में कवि की अपनी व्यक्तिगत रूचि ही प्रधान रही है। चम्पूकारों ने कथासूत्र को आगे बढ़ाने, दृश्यों और घटनाओं के वर्णन, भावभिव्यक्ति, विचारों के प्रस्तुतिकरण तथा उपदेशात्मक अभिव्यक्ति हेतु समान रूप से गद्य और पद्य का उपयोग किया है।

चम्पू काव्यों में एक उच्छ्वास के अन्तर्गत अनेक प्रकार क वृत्तों का प्रयोग मिलता है। यशस्तिलक चम्पू सदृश कतिपय चम्पू काव्यों में वार्णिक वृत्तों के अतिरिक्त मात्रिक वृत्तों का भी प्रयोग हुआ।

७. अलक्ङति

अलंकरण की प्रवृति प्रायः समस्त चम्पू काव्यों में दिखायी देती है। इनमें प्रयुक्त गद्य समास—सम्पन्न अलंकृत शैली में रचित है ग़द्य की प्रायः सभी शैलियां एकत्र या अलग अलग इन चम्पू काव्यों में द्रष्टव्य है। प्रौढ़ता, गढ़बद्धता तथा समास—सम्पन्नता में नल चम्पू के गद्य की तुलना बाण के गद्य से की जा सकती है। यशस्तिलक तथा वरदाम्बिका परिणय जैसे बाद चम्पू काव्यों का भी गद्य भाग अत्यंत प्रौढ़ तथा मनोरम है। चम्पू काव्यों का पद्य भाग भी अत्यंत सरस तथा कवित्वपूर्ण है, यद्यपि वर्णनात्मक पद्यों का भी अभाव नहीं है।

८. आकृति एवं विभाजन

गोपाल चम्पू काव्यों के आकार निर्धारण तथा विभाजन—प्रक्रिया, दोनों में चम्पूकारों ने स्वच्छन्द प्रवृति का परिचय दिया है। आकार की दृष्टि से चम्पूकाव्य वृहद्, सामान्य और लघु तीनों प्रकार के हैं। आनंदवृंदावन चम्पू ह्मह्म स्तवकों का है, जबकि नारायण चम्पू केवल एक परिच्छेद का। अधिकांश चम्पू काव्य एक से सात परिच्छेदों के हैं, उदाहरणार्थ नल चम्पू में कथावस्तु का विस्तार सात उच्छवासों में है। चम्पू काव्यों में सामान्यतया विभाजन का आधार कथावस्तु की घटनायें हैं। विभाजित खण्डों का नामकरण चम्पूकारों ने अपने रूचि के अनुरूप किया हैं । उच्छवास, स्तवक, आश्वास, तरंग, काण्ड, परिच्छेद, लम्भक, कल्लोल, विलास आदि में विविध चम्पू काव्यों को विभाजित किया गया है।

निष्कर्ष:

संस्कृत साहित्य के प्राचीन परम्परा का अनुसरण करते हुये गोपाल चम्पूकारों द्वारा काव्य का आरम्भ मंगलात्मक श्लोंको से किया गया है। मंगलाचरण के बाद, कवि—परिचय, नगर या नायक आदि का वर्णन मिलता है। अनेक चम्पू ग्रन्थों में सज्जन स्तुति तथा खलनिन्दा भी की गयी है। नलचम्पू में मंगलाचरण के अनन्तर सत्काव्य प्रशंसा, सज्जन स्तुति खल—निन्दा तथा वाल्मिक्यादि कवियों का यशगान करते हुये कवि ने अपना वंश पचिय दिया है। अधिकांश चम्पू काव्यों में मांगलिक श्लोकों के सम्बन्ध में मुख्यतया तीन प्रकार की प्रवृतियां दृष्टिगोचर है। प्रथम —जिनमें

संख्यात्मक विशेषण दिये गये हैं, अथवा समाप्ति की सूचना दी गई है। उदाहरणार्थ— 'इति श्रीमन्मित्रमिश्र कृतावानन्दचम्पू काव्ये प्रथमों यमुल्लास:' द्वितीय—जिनसे केवल अंक निर्दिष्ट कर दिये गये हैं और कवि तथा काव्य का नामोल्लेख मात्र कर दिया गया है। उदाहरणार्थ—'इति श्री त्रिविक्रमभट्टविरचितायां दमयन्ती कथायां हरचरण—सरोजक्ड़यां प्रथम उच्छवास: समाप्त:। तृतीय—जिनमें कवि और काव्य परिचय के अतिरिक्त ग्रन्थ को चरित काव्य, महाकाव्य अथवा चम्पू काव्य सम्बन्धित चूड़ामणे: श्री मन्नेमिदेव भगवत: शिष्येण सद्यो नवद्यगद्यविद्याधर — चTवर्ति शिखण्ड—मण्डनी भवच्चरणकमलेन श्री सोमदेव सूरिणा विरचिते यशोधर महाराज चरिते यशस्तिलकलकरनाम्नि महाकाव्ये राजलक्ष्मीविनोदनीनाम तृतीय आश्वास:।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि प्रबन्ध काव्य है, इसमें महाकाव्य के समान आठ से अधिक अथवा काव्य के समान आठ से कम परिच्छेद होते है। इसका विभाजन उच्छवास, उल्लास , आश्वासन इत्यादि अनेक नामकरण वाले परिच्छेदों में किया गया है। वर्णन—विस्तार में अधिक रही है। चम्पू काव्यों का अग्ड़ीरस , श्रृंगार , वीर, अथवा शांत कोई भी हो सकता । अन्य रसों का प्रयोग भी यथास्थान किया गया है। वर्णन की दृष्टि से चम्पू काव्य अन्य पुरूषात्मक और संवादात्मक शैलियों में निबद्ध है। चम्पूकाव्यों के गद्य भाग समास—सम्पन्न अलंकृत गद्य शैली में लिखे गये है। चम्पू काव्यों में से कुछ में वार्णिक और मात्रिक दोनों प्रकार के छन्दों का प्रयोग हुआ है। सामान्यतया: चम्पूकाव्यों का प्रारम्भ मंगलाचरण से हुआ है। काव्य का अन्य मंगल वाक्य या भरत वाक्य से भी हो सकता है, और कथाश्रवण के फल निर्देश से भी।

सन्दर्भ:

.... : २०१० : अग्नि पुराण , गीता प्रेस गोरखपुर , ३३६/३८
दण्डी : २००९ : काव्यादर्श , गीता प्रेस गोरखपुर ,१/३१
प्रसाद स्वामी : २००८ : सं० सा० का इतिहास , पृ० सं० ११८
डॉ राज किशोर : २००७ : सं० सा० का इतिहास , पृ० सं० १४५
पण्डे सत्यनारायण : २००६ : सं० सा० का इतिहास , पृ० सं० २०४
.... : .... : गोपाल चम्पू / पूर्व चम्पू , ३१/२

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies